

शार्क में बगैर नर के शिशु जन्म

हेमरहेड शार्क (यानी हथौड़े जैसे सिर वाली शार्क) में प्रजनन का एक ऐसा तरीका सामने आया है जो प्रायः विकसित जंतुओं में नहीं देखा जाता है। जीव विज्ञान की भाषा में इस तरीके को *पार्थेनोजिनेसिस* कहते हैं। सरल शब्दों में इस तरीके में होता यह है कि मादा के अंडे नर के शुक्राणुओं से मिलन (निषेचन) के बगैर ही विभाजित होने लगते हैं और एक पूरा प्राणी विकसित हो जाता है। आम तौर पर अंडे का विकास तभी शुरू होता है जब शुक्राणु उसे निषेचित करे।

2001 में एक पालतू शार्क के एक अंडे से निषेचन के बगैर ही शिशु का विकास हुआ था। मगर यह शिशु मात्र तीन दिन जीवित रहा था, इसलिए इसका ज़्यादा अध्ययन नहीं हो पाया था। तब माना गया था कि यह बहुत ही बिरली घटना थी। मगर अब एक अध्ययन में पता चला है कि *पार्थेनोजिनेसिस* से पैदा शिशु बरसों जीवित रह सकते हैं।

जरनल ऑफ हेरिडिटी के हाल के अंक में शिकैगो के फील्ड म्यूज़ियम के केविन फेल्डहाइम और उनके साथियों ने इस अध्ययन का विवरण दिया है। उन्होंने एक शार्क (सफेद धब्बों वाली बैम्बू शार्क) का अध्ययन किया। यह मादा शार्क बचपन से ही डेट्रॉइट प्राणी विज्ञान संस्थान के बेले आइल एक्वेरियम में रही थी और इसका किसी नर से कभी संपर्क नहीं हुआ था। 2001 के अध्ययन से प्रेरित होकर फेल्डहाइम इस शार्क के अंडों को सेने के लिए



इंक्यूबेटर में रखा करते थे हालांकि सबका विचार था कि ये अंडे अनुर्वर हैं।

सबको अचरज तब हुआ जब ऐसे सात अनिषेचित अंडों में से दो में से शिशु विकसित हुए और ये पूरे पांच वर्षों तक जीवित रहे। बाद में इन्हें किसी अन्य संस्था में भेज दिया गया। जिनेटिक विश्लेषण से प्रमाणित हुआ कि ये वाकई *पार्थेनोजिनेसिस* से पैदा हुए हैं।

शार्क करोड़ों वर्षों से पृथ्वी पर रही हैं। ऐसा लगता है कि *पार्थेनोजिनेसिस* इनके अस्तित्व को अतिरिक्त सहारा देता है। आम तौर पर तो ये लैंगिक प्रजनन ही करती हैं मगर कभी-कभार अलैंगिक प्रजनन का सहारा भी लेती हैं। क्वीन्स विश्वविद्यालय के पौलो प्रोडॉल का मत है कि कुछ शार्क ऐसे समूहों में रहती हैं जिनमें सिर्फ मादाएं होती हैं। ऐसे समूहों में समय-समय पर नर के बगैर जीवित रहने में *पार्थेनोजिनेसिस* इनके अस्तित्व के लिए ज़रूरी होता होगा।
(स्रोत फीचर्स)